☛ रौशन पाठक

जी चुका हूँ बहुत

जी चुका हूँ बहुत,
इन्सानो की बस्ती में।
अब तो मरना ही भला होगा ।

अब तो खुद की परछाई
से भी डरने लगा हूँ ।
लगता है आइना देखकर,
मै भी इन्सान बनने लगा हूँ ।
जी चुका हूँ बहुत.....

य दो रंग के चेहरे वाले,
मुझे तो राश आते नही।
इन्सानों से नाता जोड़ के,
मैं भी दो रंगो मे ढलने लगा हूँ।
जी चुका हूँ बहुत.....

मेरी कोशिश थी यही,
कि मैं ना बदलूँ कभी।
जी ना पाया सीधा–सादा रहकर
मैं भी थोड़ा बदलने लगा हूँ ।
जी चुका हूँ बहुत.....

पहले देखा तो अलग–
अलग दिखता था इन्सानों मे,
कल बहुत अजीब लगा मुझे
अब मैं भी इन्सान लगने लगा हूँ।
जी चुका हूँ बहुत.....

जितनी नफरत तुम्हे हैवानों से,
उतनी नफरत मुझे इन्सानो से ।
जब से खुद को बदला पाया
खुद से भी नफरत करने लगा हूँ ।
जी चुका हूँ बहुत.....